महाराष्ट्र में मुसलमानों की राजनीतिक हिस्सेदारी

मुसलमानों की राजनीतिक हिस्सेदारी के मामले में महाराष्ट्र की हालत भी खस्ता ही है

महाराष्ट्र राज्य की 11.5 फीसदी आबादी मुस्लिम है मगर 288 विधानसभा सीटों में केवल 10 विधायक अर्थात केवल 2.8% , आखिर क्यूँ?

हर बार की तरह 2019 में भी महाराष्ट्र विधानसभा में मुसलमानों की संख्या कम ही रही है. 2019 विधानसभा चुनाव में 10 मुसलमान विधायकों ने जीत हासिल की थी. बड़ी बात यह है कि इन 10 विधायकों में शिवसेना का भी एक विधायक शामिल है. साल 2014 के चुनावों में 9 मुस्लिम विधायकों ने जीत हासिल की थी.

किस पार्टी से कितने मुसलमान विधायक जीतें?

विधानसभा में 2019 में एनसीपी, एमआईएम और समाजवादी पार्टी के दो-दो विधायक और कांग्रेस के तीन मुसलमान विधायक पहुंचे हैं जबकि एक विधायक शिवसेना से पहुंचा है. साल 2014 की तरह बीजेपी ने 2019 में भी महाराष्ट्र में एक भी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया है. महाराष्ट्र में मुस्लिम वोटर 40 विधानसभा सीटों पर निर्णायक भूमिका निभाता है.

महाराष्ट्र में कब-कब कितने मुसलमान विधायक जीते?

1962 11	1967 9	1972 13	1985 10
1990 7	1993 13	1995 8	2004 11
2009 11	2014 9	2019 10	

गौरतलब है कि महाराष्ट्र के 1.30 करोड़ मुसलमान मतदाता राज्य की **11.24 करोड़ जनसंख्या का 11.56 फीसदी** हैं. उत्तरी कोंकण, खानदेश, मराठवाड़ा और पश्चिमी विदर्भ में मुसलमानों की संख्या अधिक है. मुस्लिम समुदाय 40 विधानसभा क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसमें मुंबई की सीटें भी शामिल हैं.

कांग्रेस-एनसीपी गठबंधन को मुस्लिम मतदाताओं के लिए स्वाभाविक पसंद माना जाता रहा है जो कि बीजेपी के परंपरागत वोटर नहीं रहे हैं. बता दें कि 2019 विधानसभा चुनाव में 288 सीटों वाले महाराष्ट्र विधानसभा में **बीजेपी 105, शिवसेना 56, कांग्रेस 44 और एनसीपी 54 सीटें जीती है. वहीं अन्य के खातों में 29 सीटें** गई हैं.

हाल में हुए एक सर्वे के मुताबिक आगामी लोकसभा चुनाव में तमाम तोड़ फोड़ की राजनीति के बावजूद भाजपा नीत NDA गठबंधन को महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीटों में से केवल 24 सीटें ही मिलने का अनुमान है। बाकि 24 सीटों पर कांग्रेस अगुआई वाले।INDIA गठबंधन के जीतने की संभावना है।

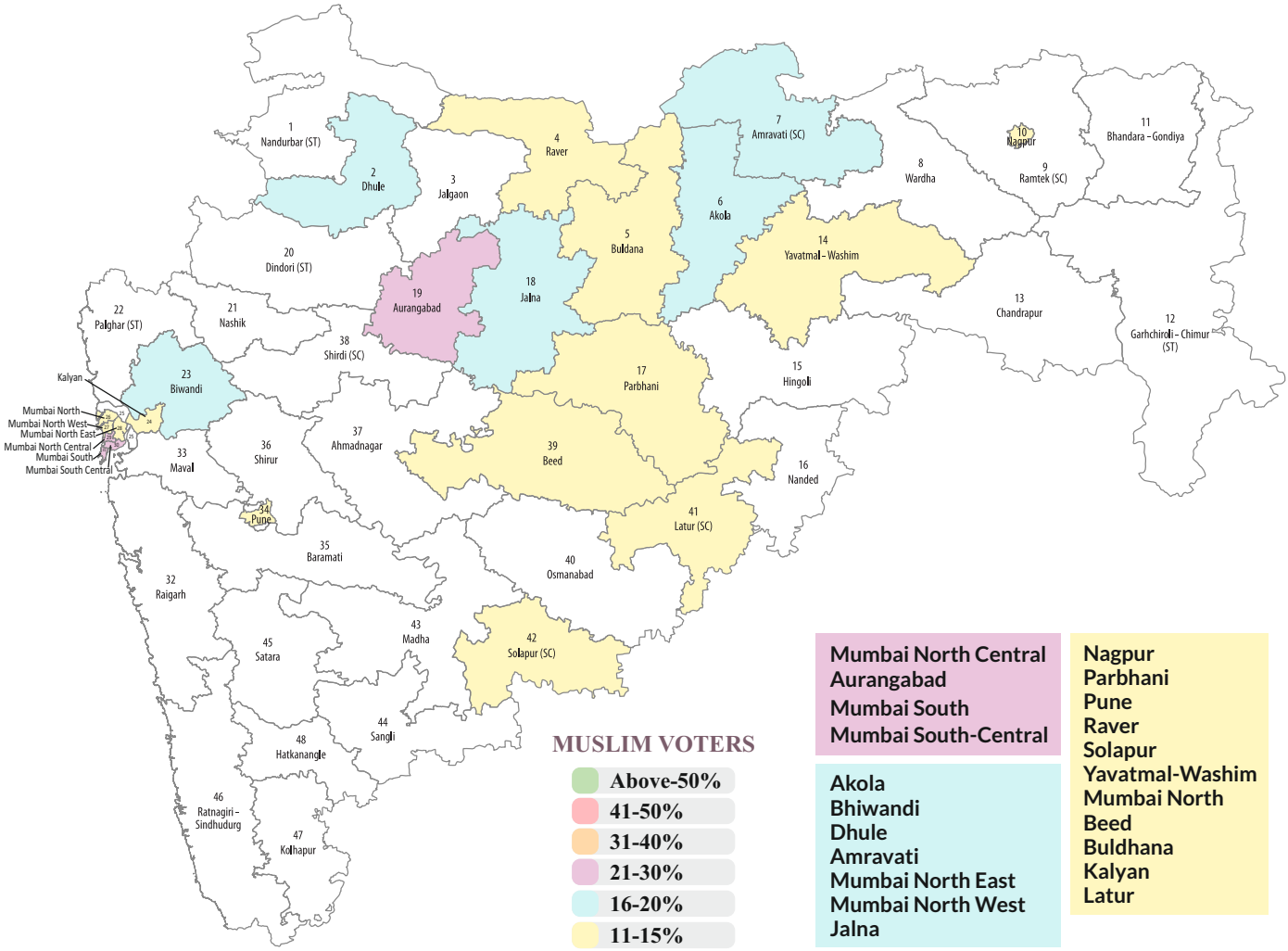

इस मैप को जरा ध्यान से देखिए इसमें मुस्लिम केंद्रित लोकसभा सीटों के बारे में बताया गया है जिसमें 21 से 30 फ़ीसदी मुस्लिम वोट वाली सीटें जालना, औरंगाबाद और मुंबई की 2 सीटें शामिल है। इसके अलावा 3 सीटें ऐसी भी है जहां पर मुस्लिम वोट 15 से 20 फीसदी है जिसमें अकोला, भिवंडी और धुले प्रमुख है।

अब देखने वाली यह बात है कि जो पार्टियां अपने आप को सेक्युलर कहती हैं मुसलमानों का एकतरफा वोट लेना चाहती है वह मुसलमानों की राजनीतिक भागीदारी के मामले में महाराष्ट्र में कितने मुस्लिम उम्मीदवारों को चुनाव में उतारती है। जैसा की उम्मीद है यह गिनती ना के बराबर होगी।

मुसलमानों के जिम्मे केवल एक खास पार्टी को हराने के लिए फलाने पार्टी को जितवाने की जिम्मेदारी है। मुस्लिम समाज अपना विधायक-सांसद बनवा कर का करेंगे। बिना किंतु परंतु किये चुप चाप इनको वोट दे आईये वर्ना भाजपा आ जायेगी।

राजनीतिक तौर पर बेहद ही महत्वपूर्ण राज्य महाराष्ट्र जिसकी 11 करोड़ की आबादी में से 11.54 फीसदी मुसलमान है। आबादी के हिसाब से देखे तो तो इस राज्य की 288 विधानसभा सीट में से 33 सीटों पर मुस्लिम विधायक होने चाहिए मगर हकीकत में ये गिनती 10 के आसपास ही रहती है।

अगर बात लोकसभा की 48 सीटों की बात करें तो इस बार 2019 लोकसभा चुनाव में एकलौते मुस्लिम सांसद AIMIM के इम्तियाज जलील औरंगाबाद सीट से बहुत कम मार्जिन से चुनाव जीते हैं। उनसे पहले आखिरी बार लोकसभा के लिए चुने जाने वाले मुस्लिम सांसद 2004 में रायगढ़ से महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत बैरिस्टर एआर अंतुले थे।

अभी तक महाराष्ट्र से चुने गए मुस्लिम सांसदः

मुहम्मद मोहिब्बुल हक (अकोला, 1962)

समदली सय्यद (जलगांव, 1967)

असगर हुसैन (अकोला, 1967)

अब्दुल सालेभोय (मुंबई, 1971)

केएम असगर हुसैन (अकोला, 1971)

अब्दुल शफ़ी (चंद्रपुर, 1971)

गुलाम नबी आज़ाद (1980, वाशिम)

क़ाज़ी सलीम (औरंगाबाद, 1980)

हुसैन दलवई (1984, रत्नागिरी)

गुलाम नबी आज़ाद (1984, वाशिम)

अब्दुल रहमान अंतुले (रायगढ़, 1989, 1991, 1996, 2004)

इम्तियाज़ जलील (औरंगाबाद 2019)

महाराष्ट्र की आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी लगभग 11.54 प्रतिशत है, जो उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार के बाद चौथी सबसे बड़ी आबादी है, जिनकी मुंबई, मराठवाड़ा, विदर्भ और उत्तरी महाराष्ट्र जैसे क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या है। इसके बावजूद इतने बड़े सामाजिक समूह को धीरे-धीरे चुनावी राजनीति में प्रतिनिधित्व से वंचित किया जा रहा है। मुसलमान दलितों और आदिवासियों के विपरीत हैं, जिनके पास राजनीतिक आरक्षण है।

इस मैप को ध्यान से देखिये ये मौजूदा समय में महाराष्ट्र में लोकसभा सीटों पर मुस्लिम वोटर के प्रभाव के बता रहा है। उम्मीद के मुताबिक इस बार भी सभी राजनीतिक पार्टियां मुसलमानों को महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीट में से एक भी सीट पर उम्मीदवार नहीं बनायेंगी। बाकि अब मुसलमानों को अपना राजनीतिक भविष्य खुद तय करना है।